हिन्दू राष्ट्र - नारियों के लिए नर्क

जानिए कैसे?

- पूजा पांडे

भाजपा की सरकार आने पर मैं बहुत खुश हुई थी। मुझे लगा कि अब तो रामराज आ जाएगा और भारत हिंदू राष्ट्र बन जाएगा। मैंने सोचा कि हिंदू राष्ट्र बनाने की शुरुआत मैं ही कर दूं। बस मैंने उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में पहली हिंदू अदालत खुलवा दी। यह अदालत 15 अगस्त 2018 को खोली गयी। मैं ही इस हिंदू अदालत की पहली जज नियुक्त हुई। मैंने सोचा कि मैं मनुस्मृति के आधार पर इस अदालत में न्याय करूंगी। सभी हिन्दू संगठनों ने इसका दिल से स्वागत किया। मैंने अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के पंडित अशोक शर्मा से कहा कि मैं इसका शुभारम्भ यज्ञ कराकर करना चाहती हूँ। पर उन्होंने इसे टालते हुए कहा कि मनुस्मृति के अनुसार स्त्री यज्ञ नहीं कर सकती। मुझे विश्वास नहीं हुआ। फिर मैंने मनुस्मृति पढ़नी शुरू कर दी। इसके अध्याय 11, श्लोक 36 में लिखा है -

न वै कन्या न युवतिर्नाल्पविद्यो न बालिशः।
होता स्यादग्निहोत्रस्य नार्तो नासंस्कृतस्तथा।।

(कन्या, स्त्री, अल्प विद्या वाला मूर्ख रोगी, यज्ञोपवीत न रखने वाला, ये सब यज्ञकार्य या दैनिक अग्निहोत्र नही कर सकती)

यह सब पढ़कर मुझे अच्छा नहीं लगा लेकिन मैं चुप रही। 2 अक्टूबर 2018 तक, मुझे अदालत के नियम बनाने थे। पर इससे पहले ही मेरे पास केस आने शुरू हो गये थे।

दुराचारी पति के खिलाफ पत्नी की शिकायत -

मेरे पास पहला केस आया जिसमें एक हिंदू औरत ललिता देवी अपने पति के खिलाफ शिकायत कर रही थी कि उसका पति चरित्रहीन है। शराब पीकर उसको गाली देता है और पीटता है। वह उसे छोड़ना चाहती है क्या करें?

मैंने उसे दो-तीन घंटे इंतजार करने के लिए कहा और मनुस्मृति में संबंधित श्लोक खोजने लगी। मनुस्मृति के अध्याय-5, श्लोक-154 को जब मैंने पढ़ा तो मेरे पसीने छूटने लगे। इसमें लिखा था -

विशीलः कामवृत्तो वा गुणैर्वा परिवर्जितः।

उपचार्यः स्त्रिया साध्व्या सततं देववत्पतिः।।

(यदि पति निष्ठुर हो तथा दूसरी स्त्री से सम्बन्ध रखता हो अथवा गुणहीन हो, तो भी स्त्री को हमेशा पतिव्रता बनकर उसे देवता की तरह पूजना चाहिए)

मैंने उसे कहा कि तुम्हारा पति कितना भी खराब क्यों ना हो, बस तुम उसको देवता की तरह पूजते रहो। उसको कभी छोड़ना नहीं। यह सुनकर उसकी आंखों में आंसू आ गए और वह चुपचाप चली गई।

उसी समय मुझे एक फिल्मी गाना भी याद आ गया - **"भला है, बुरा है, कैसा भी है, मेरा पति मेरा देवता है...."** मुझे लगा कि यह गाना भी शायद मनुस्मृति से प्रेरित है।

पत्नी को वेश्यालय में बेच रहा था -

एक दिन एक गरीब सी औरत फूलमती, मेरी अदालत में आयी और बताने लगी, "मेरा पति बहुत शराबी और जुआरी है। वह एक दलाल के साथ जुए के खेल में हार गया। अब वह मुझे 10 हजार रुपए में दलाल को बेचना चाहता है। जज मैडम मुझे बचा लो।"

मैंने उसे आश्वासन देते हुए मनुस्मृति पढ़नी शुरू कर दी। मेरी नजर अध्याय 9 के 45वें श्लोक पर अटक गई। उसका मतलब था कि पति पत्नी को छोड़ सकता है, गिरवी रख सकता है और बेच सकता है। लेकिन स्त्री को इस प्रकार के अधिकार नही हैं।

मैंने उस औरत से कहा कि यदि तुम्हारा पति तुम्हें बेचता है तो बिक जाओ। यह शरीर तो मिट्टी का बना है। यह सोच लेना कि मिट्टी बिक गई है।

लेकिन यह निर्णय देते समय मैं खुश नहीं थी। मुझे लगा कि मैंने उसके साथ सही न्याय नहीं किया है। फिर मुझे याद आया कि युधिष्ठिर जी ने भी तो द्रोपदी को जुए में दांव पर लगा दिया था। लगता है कि उस समय भी मनुस्मृति का शासन चल रहा था।

बाप बेटी को पढ़ने नहीं दे रहा -

दो-तीन दिन बाद एक गरीब औरत चंपा देवी अपनी लड़की रजनी के साथ मेरी अदालत में आई और बोली, "मेरा पति रिक्शा चलाता है और शराब पीता है। मैं लोगों के घर में काम करके पैसा कमाती हूँ। मेरी सारी कमाई जो मैं रजनी की पढ़ाई के लिए रखती हूँ उसकी शराब पी जाता है। जिसकी वजह से मैं बेटी की फीस नहीं दे पा रही हूँ मेरी मदद करो।"

मैं मनुस्मृति में इस तरह के अपराध की सजा ढूंढने लगी। पर मुझे अध्याय- 9, श्लोक- 18 में कुछ अजीब सा ही मिला।

नास्ति स्त्रीणां क्रिया मन्त्रैरिति धर्मे व्यवस्थितिः ।
निरिन्द्रिया ह्यमन्त्राश्च स्त्रीभ्योऽनृतं इति स्थितिः ।।

(स्त्रियो को पढ़ने का, पढ़ाने का, वेद-मंत्र बोलने का या उपनयन (जनेऊ) का अधिकार नही है)

अध्याय- 8, श्लोक- 416 में कहा गया है -

भार्या पुत्रश्च दासश्च त्रय एवाधनाः स्मृताः ।
यत्ते समधिगच्छन्ति यस्य ते तस्य तद्धनम् ।।

(स्त्री की संपति का मालिक उसका पति ही है। वह कभी मालिक नहीं हो सकती है)

अब मेरे पास कोई और उपाय नहीं था। मैंने चंपा देवी को बताया कि लड़कियों को पढ़ने की कोई जरूरत नहीं है। उसको

घर का काम सिखाओ। तुम्हारी कमाई पर तुम्हारा हक नहीं, तुम्हारे पति का ही हक है इसलिए मैं कुछ नहीं कर सकती। चंपा देवी फूट-फूट कर रोने लगी। मेरी भी आंखों में आंसू आ गए।

मनुस्मृति पढ़ते पढ़ते, मुझे कई और खतरनाक श्लोक दिखाई पड़े जो इस प्रकार से हैं -

पौंश्चल्याच्चलचित्ताच्च नैस्नेह्याच्च स्वभावतः ।
रक्षिता यत्नतोऽपीह भर्तृष्वेता विकुर्वते ।।

(अध्याय- 9 श्लोक-15)

(स्त्री चंचल, ह्रदयहीन, कुटिल और बेवफा होती हैं)

अविद्वांसं अलं लोके विद्वांसं अपि वा पुनः।
प्रमदा ह्युत्पथं नेतुं कामक्रोधवशानुगम् ।।

(अध्याय-2, श्लोक-214)

(स्त्री पुरुष को मोहित करने वाली, उसको दास बनाकर गुमराह करने वाली होती हैं)

शय्यासनं अलङ्कारं कामं क्रोधं अनार्जवं ।
द्रोहभावं कुचर्यां च स्त्रीभ्यो मनुरकल्पयत् ।।

(अध्याय-9, श्लोक-17)

(स्त्री केवल शैय्या, आभूषण और वस्त्रों से ही प्रेम करने वाली, वासनायुक्त, बेईमान, ईर्षालु और दुराचारी होती है)

ये सब देखने के बाद मेरा दिल बैठने लगा। फिर मुझे तुलसीदास की रामचरितमानस का वो पद याद आया जिसमें लिखा था, **"ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी"** मतलब कि जैसे ढोल पीटने से ही बजता है, वैसे ही नारी, शूद्र और जानवरों को पीटने से ही वे काम करते हैं। मुझे लगा कि तुलसीदास भी मनुस्मृति से प्रभावित थे।

प्रेम विवाह की समस्या -

अगले दिन एक सुनीता शर्मा नाम की लड़की मेरी अदालत में पेश हुई। उसने कहा कि वह 21 वर्ष की है और एक मोहम्मद रफीक नाम के लड़के से प्यार करती है। वह उसके साथ कॉलेज में पढ़ी है। उसका परिवार बहुत अच्छा है। हम दोनों शादी करना चाहते हैं। हम दोनों के परिवार भी इसके लिए राजी हैं। पर हिंदू सेना के लोग इसमें रोड़ा अटका रहे हैं। वे इसे लव जिहाद का मामला बनाना चाह रहे हैं। वे मुझ पर दबाव बना रहे हैं कि मैं उनके खिलाफ जोर जबर्दस्ती वाली कोई शिकायत दर्ज कराऊं। मैं ऐसा नहीं करना चाहती।

मैंने कहा कि तुम्हारा मामला तो बड़ा साफ है। जब मियां बीबी राजी, तो क्या करेगा काजी। फिर भी मैं तुम्हारे मामले में योगी जी से बात करूंगी।

योगी जी से मुलाकात का कटु अनुभव -

मैं मुख्यमंत्री योगीजी से मिलने लखनऊ पहुंची और अपना परिचय दिया। मैंने पूछा कि योगीजी आप प्रेम विवाह के खिलाफ क्यों हैं?

योगीजी ने हंसते हुए उत्तर दिया, "मेरा प्रेम असफल हो गया था इसलिए अब मैं किसी का भी प्रेम विवाह सफल नहीं होने दूंगा। यही हाल मोदी जी का भी है। उनका तो बिना प्रेम विवाह था पर उसमें प्रेम आखिर तक भी नहीं पनप पाया। खट्टर साहब के प्रेम में भी खटास पड़ गई थी इसलिए वे भी अभी तक कुंवारे हैं। अब जब जनता कुंवारों को वोट देगी तो यह सब तो झेलना ही पड़ेगा।"

फिर योगी जी ने कुछ सोचते हुए कहा, "तुम औरत हो इसलिए तुम राजनीति नहीं समझोगी। हमारा तो अस्तित्व ही ध्रुवीकरण से आया है। अब सत्ता बनाये रखने के लिए हिंदू-मुस्लिम तो करना ही पड़ेगा।"

मैं एकदम सन्न रह गई थी। योगी जी ने पूरी नारी जाति का अपमान कर दिया था। उन्होंने कहा था कि औरत नासमझ होती है। मैं गुस्से में तुरंत वहां से वापस चली आई।

मैं अपनी अदालत में उदास बैठी हुई थी। तभी वहां पर पंडित अशोक शर्मा आ गए। उन्होंने पूछा कि क्या बात हुई।

मैंने कहा कि अब मेरे से इस अदालत का काम नहीं हो पाएगा।

शर्मा जी ने कहा,"मैं तो पहले ही कह रहा था कि औरत स्वतंत्र रूप से काम नहीं कर सकती। मनुस्मृति में लिखा है" -

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यं अर्हति।।

(पुत्री, पत्नी और माता युवा या वृद्धा किसी भी स्वरुप में नारी स्वतंत्र नही होनी चाहिए)

इतना सुनते ही मेरा खून खौल उठा। अब मैं और ज्यादा सहन नहीं कर सकती थी। मैंने मेज पर रखी मनुस्मृति की किताब उठाई और पंडित शर्मा के मुंह पर जोर से फेंक कर मारी। उनका चश्मा टूट कर नीचे गिर गया था और वह जोर से हाय हाय करके चिल्लाने लगे।

मैंने कहा, "यह लो अपनी मनुस्मृति और यह लो अपनी जज की कुर्सी। मैं मनुस्मृति के हिसाब से न्याय नहीं कर सकती। इसमें सबके लिये बराबर न्याय है ही नहीं। भारत में जो संविधान चल रहा है, वही ठीक है। उसी के चलते ही मैं इतनी सुरक्षित हूं, नहीं तो अब तक किसी कोठे में पड़ी सड़ रही होती।"

मैं सोचने लगी कि इंदिरा गांधी भी तो औरत थी। फिर वह कैसे स्वतंत्र रूप से भारत के प्रधानमंत्री के रूप में काम कर पायी। वह एक सफल प्रधानमंत्री रहीं थी। उन्होंने पाकिस्तान को भी युद्ध में हरा दिया था। पंडित जवाहरलाल नेहरू की वजह से ही वह प्रधानमंत्री बन पाई थी। उन्होंने मनुस्मृति के नियमों को

नजरअंदाज कर दिया था इसीलिए इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बन पाई थी। शायद इसी कारण से भाजपा पंडित नेहरू को पसंद नहीं करती है क्योंकि वे प्रगतिशील विचारों के थे और मनुस्मृति की दकियानूसी विचारधारा को मानने से इनकार करते थे।

प्रथम हिन्दू न्यायालय बन्द हो चुका था। इसी बीच इलाहाबाद हाई कोर्ट से इसके बारे पूछताछ के लिये एक नोटिस आ गया था। वास्तव में यह न्यायालय गैर-कानूनी ही था।

देश के नागरिकों को संदेश -

यह मेरा खुद का एक दुखद अनुभव था। मेरी गलतफहमी दूर हो चुकी थी। हिन्दू राष्ट्र की कल्पना सुनने में ही अच्छी लगती है। शास्त्र पुराण जब तक ना पढ़े जाए, तभी तक अच्छे लगते हैं। हमें समय के साथ बदलना होगा। कुछ पुरानी चीजें अच्छी हो सकती हैं, कुछ बुरी हो सकती हैं। हमें बुरी बातें त्याग देनी चाहिए। जबरदस्ती अपने सिर पर नहीं ढोनी चाहिए।

मुझे विश्वास है कि विज्ञान और संविधान से ही इस देश का भला हो सकता है। प्राचीन हिंदू संस्कृति के पीछे भागने से कोई फायदा नहीं होगा। यह ज्यादातर लोगो को, खासकर महिलाओं को बराबरी का दर्जा नहीं देती है।

भारत के सभी भाइयों और बहनों से मेरी हाथ जोड़कर विनती है कि वे किसी हिंदू राष्ट्र की गलतफहमी में ना रहें। भावनाओं में ना बहें। खुद सोच विचार कर विवेकपूर्ण निर्णय लें।